'ब्रह्माकुमार' है सबसे बड़ा टाइटल

पहली बार जैसे ही पिताश्री का दर्शन हुआ तो मेरी आत्मा में एक विशेष आनंद और आत्म-तृप्ति का अलौकिक भाव भर गया। मैं सात दिन तक रहा और रात दिन बाबा को देखता रहा। मुझे ये पक्का हो गया था कि बाबा विश्व में एक महान संत हैं क्योंकि ये जो दूसरों को कहते हैं वह स्वयं करते हैं । पिताश्री ब्रह्मा के संग के अनुभवयुक्त विचार प्रस्तुत किये ब्रह्माकुमारीज मल्टी मीडिया के अध्यक्ष ब्र.कु.करूणा ने।

प्रश्न: पहली बार जब आप बाबा के सानिध्य में आये तो आपको कैसा लगा? आप क्यों इस संस्था से जुड़े?

उत्तर: मेरा जन्म एक धार्मिक परिवार में हुआ और बचपन से ही अनेक साधु-संतों के संपर्क में रहा। अनेक विद्वानों के प्रवचन सुने परंतु जब मेरा पहली बार ब्रह्माकुमारी संस्था से संपर्क हुआ तो वहां दादी हृदयपुष्पा जी से मुलाकात हुई। उन्होंने मुझे बताया कि आबू पर्वत पर स्वयं परमपिता परमात्मा शिव, प्रजापिता ब्रह्मा के तन में आकर के सच्ची गीता सुना रहे हैं। परमात्मा से मिलन की आस तो बचपन से थी तो उनकी इस निश्चय से भरी बात सुनकर मुझसे रहा नहीं गया और मैं इसी परमात्म-मिलन के लक्ष्य से माऊंट आबू आया। पहली बार जैसे ही पिताश्री का दर्शन हुआ तो मेरी आत्मा में एक विशेष आनंद और आत्म-तृप्ति का अलौकिक भाव भर गया। मैं सात दिन तक रहा और रात दिन बाबा को देखता रहा। मुझे ये पक्का हो गया था कि आज विश्व में ये एक महान संत हैं क्योंकि ये जो दूसरों को कहते हैं वह स्वयं करते हैं, उनका कहना था कि मैं जो करता हूं वही सुनाता हूं। मैंने बाबा को मन ही मन अपना आदर्श और गुरु मान लिया। ये पहली विशेषता जो मैंने उनमें देखी।

दूसरी विशेषता यह कि आज विश्व के इतिहास में कोई भी व्यक्ति ऐसा नहीं है जिसने एक ही स्थान पर 14 वर्ष तक बहनों एवं माताओं को रख करके तपस्या कराये और उनका जीवन दिव्य व पावन बनाये। ये भगवान के अलावा और कोई नहीं कर सकता। तीसरी विशेषता है कि आज कई लोग अपने व्यापार को बुद्धि तथा पैसे के बल से चलाने का सोचते हैं परंतु मेरा अनुभव है कि किसी भी व्यापार को या घर को चलाने के लिए जिम्मेदार व्यक्तियों की जरूरत होती है। आज हम खुश हैं कि इस अंतर्राष्ट्रीय संस्था के पूरे विश्व में दस हजार सेवाकेन्द्र हैं और लाखों भाई-बहनें हैं जो नियमित आध्यात्मिक शिक्षा व राजयोग का अभ्यास कर श्रेष्ठ जीवन बना रहे हैं। ये बाबा एवं प्रारंभ के उन 350 बहनों की त्याग व तपस्या का प्रतिफल है जो लाखों का जीवन परिवर्तन हुआ है।

मैं जब आबू आया तो बाबा से पूछा कि बाबा मुझे क्या करना है? तो उन्होंने कहा कि तुम्हें वही करना है जो मैंने किया। तब से मैंने अपना लक्ष्य बना लिया कि जो भी ऐसी आत्मा है जो त्यागी-तपस्वी है तो उसको आगे बढ़ाने में सहयोग देता रहूं। मेरा और कोई उद्देश्य नहीं है कि मैं सेन्टर खोलूं, जोन इंचार्ज बनूं या कोई पोस्ट-पोजीशन का ख्याल नहीं आया। क्योंकि बाबा ने कहा था कि ब्रह्माकुमार का टाइटल बहुत बड़ा है जो हम सबको प्राप्त है। जैसे ब्रह्मा और ब्रह्मा का मैं कुमार हूं यही मेरे जीवन की सबसे बड़ी खुशी है।

प्रश्न: समर्पित जीवन जीने का निर्णय लेने का आधार क्या था? समर्पित होने के बाद आपने सेवाओं के क्षेत्र में नित नवीन अविष्कार किए और महिलाओं की प्रमुखता लिए इस संस्था में अपनी महती भूमिका कैसे निभाई?

उत्तर: जिस दिन मैं बाबा से मिला था उसी दिन इस दुनिया का त्याग करते हुए बाबा को अपना जीवन समर्पित कर दिया था। और बाबा ने भी जैसे माता-पिता छोटे बच्चे को हाथ पकड़कर चलाते हैं वैसे मुझे 9 साल तक ट्रेनिंग दी, हर बात के लिए बाबा ने मुझे

साइंस की नवीन तकनीकों के माध्यम से परमात्म-संदेश को विश्व में पहुंचाने, संस्था के प्रकाशन ओम शांति मीडिया, रेडियो मधुबन, पीस ऑफ माइण्ड चैनल, इंटरनेट आदि के उपयोग द्वारा विश्व कल्याण का कार्य सम्पन्न करना - यही संकल्प है।

प्रेरणा दी। ऐसा कोई काम नहीं है जो बाबा ने मुझे नहीं सिखाया हो। हर प्रकार की शिक्षा बाबा और मम्मा ने मुझे दी। इसी बात को देखते हुए दादी प्रकाशमणि जी ने मुझे आबू में बुलाया और उसके बाद मेरी चिंता केवल दक्षिण भारत तक ही सीमित नहीं रही बल्कि पूरे भारत और विश्व तक बाबा का संदेश कैसे पहुँचाया जाए यह धुन लग गई। यही सोचकर इंजीनियर होते हुए भी मैंने मीडिया में रुचि ली और मीडिया का विशेष रूप से अध्ययन किया। एक प्रोफेशनल के रूप में बड़े-बड़े अखबारों के साथ और बड़े-बड़े संस्थानों के साथ जैसे यूनाइटेड न्यूज ऑफ इंडिया आदि में मैंने 26 साल तक काम किया, केवल इसी लक्ष्य से कि सारे विश्व तक परमात्मा का संदेश कैसे पहुँचाया जाए। इंजीनियर होने के कारण विश्व में जहाँ-जहाँ भी नए आविष्कार होते थे जैसे अमेरिका, जापान, जर्मनी तो मैंने उसमें भाग लिया और उन नवीन तकनीकों को संस्था के अंतर्राष्ट्रीय मुख्यालय में लाकर उपयोग किया। धीरे-धीरे उन्हें भारत के सभी सेवाकेन्द्रों तक पहुँचाया गया। जैसे कि आज सभी सेन्टर्स पर कम्प्यूटर है, ईमेल्स की व्यवस्था है। आज हमारा अपना पीस ऑफ माइंड चैनल बन चुका है। रेडियो मधुबन है और प्रकाशन भी है जैसे ओमशान्ति मीडिया। तो इस प्रकार हम लोग जल्दी-जल्दी बाबा का संदेश पूरे विश्व में पहुँचा सकें, इस प्रयास में लगे हैं। अभी हाल ही में मैं अमेरिका गया था वहाँ पीस ऑफ माइंड चैनल जनता तक पहुँच सके इसका पूरा प्रयास किया। हमने हर प्रकार की तकनीक चाहे कम्यूनिकेशन है चाहे आई.टी. है चाहे मीडिया है उसके जरिए ईश्वरीय ज्ञान हर एक तक पहुँचाने का प्रयास करता रहा। बाबा का यह वरदान कि सफलता आपका जन्मसिद्ध अधिकार है, सदा मेरे साथ रहा है।

प्रश्न: बाबा की किस महानता ने आपके हृदय को स्पर्श किया जो आज तक भी आपको शक्ति प्रदान करती है और आप आध्यात्मिक क्षेत्र की उन ऊँचाइयों तक पहुंचने में सफल रहे हैं?

उत्तर: बाबा में हमने देखा सेवा की प्रेरणा देते हुए स्वयं भी सेवा करते रहे लेकिन कभी भी उन्होंने तपस्या को कम मार्क्स नहीं दिया है अपने जीवन में चाहे अमृतवेला हो, चाहे रात-दिन कभी भी तपस्या करते हुए आखिरी दिन तक 93 वर्ष की आयु में भी बाबा ने तपस्या को दूसरा स्थान नहीं दिया सदैव प्रथम रखा। हम सबको इस समय सबसे अधिक सदगुणों की धारणा की आवश्यकता है क्योंकि बाबा कहते थे देवता वो है जो दैवीगुणों से सम्पन्न है। हमने क्या सेवा की ये कोई नहीं पूछेगा लेकिन सतयुगी देवता माना सदगुण या दैवीगुण वाला इसलिए बाबा का एक-एक गुण हमारे लिए आदर्श रहा और शक्तियाँ भी किस तरह अपने अंदर लाना चाहिए उसका भी प्रत्यक्ष उदाहरण हमने बाबा के जीवन में देखा। आज हम कितने भी बिज़ी हैं लेकिन तपस्या और दैवीगुणों की धारणा इसपर मेरा विशेष ध्यान रहता है।

प्रश्न: निराकार परमात्मा का जो अवतरण हुआ है उनकी शक्तियों को आप अपने जीवन में किस प्रकार अनुभव करते हैं?

उत्तर: हमारा पहला-पहला पाठ है कि हम शरीर नहीं आत्मा हैं परंतु साथ-साथ परमात्मा निराकार होते हुए भी साकार में आकर के हम बच्चों को पालना दे रहे हैं केवल इसी बात के लिए कि बच्चे किसी भी तरह निराकार से जुड़े रहें और भगवान को अपना साथी बनाएं। बाबा अभी हम बच्चों को पक्का करा रहे हैं कि -शेष पेज 10 पर

रायपुर। छ.ग. में लगातार तीसरी बार सरकार बनाने पर मुख्यमंत्री डॉ.रमन सिंह को तिलक लगाकर बधाई देते हुए ब्र.कु.कमला व ब्र.कु.सविता।

बदायूँ। विधायक भारत सिंह, जिला पंचायत अध्यक्ष पूनम बहन, एम.एल.सी.जितेन्द्र यादव, ब्र.कु.सरोज व ब्र.कु.करूणा तथा अन्य ककोड़ा मेले में आयोजित आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए।

भिवानी। हरियाणा के स्वास्थ्य एवं पर्यटन मंत्री रामकिशन फौजी को ओमशान्ति मीडिया भेंट करते हुए ब्र.कु.सुमित्रा।

मुम्बई-बोरिवली। ट्रांसपोर्ट विंग द्वारा आयोजित कार्यक्रम में मेन कैब्स के सीइओ सिद्धार्थ पाहवा, नीता ट्रैवल्स के मालिक सुनील लोला, ब्र.कु.दिव्यप्रभा

पुष्कर। अंतर्राष्ट्रीय पुष्कर मेले में जिला कलेक्टर वैभव गालरिया को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.राधिका।

भंडारा। सुरक्षा व दक्षता अधिकारी दिवटे साहेब, ब्र.कु.शांता, विभागीय कर्मचारी वर्ग अधिकारी आध्यात्मिक कार्यक्रम पश्चात समूह चित्र में।